आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

मध्यस्थ दर्शन के सह-अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से पारिवारिक जीवन: एक समाधानकारी दृष्टि

बंसी चंदराना,
शोधार्थी, दर्शन एवं थियोलॉजिकल स्टडीज़ स्कूल,
एल.जे.विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
chandaranabansi@gmail.com
एवं
सुनील छानवाल
दर्शन एवं थियोलॉजिकल स्टडीज़ स्कूल,
लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

शोध सारांश

यह शोध पत्र मध्यस्थ दर्शन के सह-अस्तित्ववाद के दृष्टिकोण से पारिवारिक जीवन की एक समाधानकारी दृष्टि प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से, मानव समाज को आदर्शवाद और भौतिकवाद—दो प्रमुख विचार धाराओं ने आकार दिया है। ये दोनों ही, अलग-अलग तरीकों से, परिवारों को व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं।

आदर्शवाद संबंधों को सिद्धांतों, अनुष्ठानों और अमूर्त नैतिक संहिताओं से बाँधता है, जो अक्सर सत्ता, भय या कर्तव्य की भावना से लागू होते हैं। इसके विपरीत, भौतिकवाद पारिवारिक जीवन को आर्थिक आवश्यकता और व्यक्तिगत संतुष्टि के चश्मे से देखता है, उपभोग, स्वामित्व और प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करता है।

दोनों दृष्टिकोण, अपने इरादों के बावजूद, वास्तविक विश्वास, स्नेह और संतुलन पर आधारित एक पारिवारिक वातावरण बनाने में संघर्ष करते हैं। परिणामस्वरूप, परिवार कठोर अपेक्षाओं और स्व-केंद्रित उद्देश्यों के बीच फँस जाते हैं। मध्यस्थ दर्शन, या सह-अस्तित्ववाद का दर्शन, एक भिन्न दृष्टि प्रदान करता है। यह भय या भौतिक लाभ पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, एकजुटता और सम्मान के लिए स्वाभाविक मानवीय आकांक्षा से शुरू होता है।

मुख्य शब्द : मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद, मानवीय परिवार, पारिवारिक संबंध, आदर्शवाद
भौतिकवाद, पारिवारिक संतुलन

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में परिवार हमेशा से एक केंद्रीय इकाई रहा है। यह वह पहला समूह है जहाँ व्यक्ति समाज और प्रकृति के साथ अपने संबंधों को सीखता है। हालाँकि, आधुनिक युग में, परिवार की संरचना और कार्य-प्रणाली गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। इन चुनौतियों के मूल में दो प्रमुख विश्व-दृष्टिकोण हैं जिन्होंने मानव समाज को सदियों से प्रभावित किया है:

1.1 आदर्शवाद (Idealism)

आदर्शवाद संबंधों को सिद्धांतों, अनुष्ठानों और अमूर्त नैतिक संहिताओं पर निर्भर करता है। इस विचारधारा में संबंध सत्ता, भय या कठोर कर्तव्य की प्रणालियों के माध्यम से लागू किए जाते हैं। आदर्शवाद का मुख्य दुष्प्रभाव यह है कि यह संबंधों को सत्ता द्वारा नियंत्रित दायित्वों में बदल देता है, जिससे स्वाभाविकता और सहजता का हनन होता है।

1.2 भौतिकवाद (Materialism)

भौतिकवाद पारिवारिक जीवन को आर्थिक आवश्यकता और व्यक्तिगत संतुष्टि के चश्मे से देखता है। यह दृष्टिकोण उपभोग, स्वामित्व और प्रतिस्पर्धा पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। इस विचारधारा की समस्या यह है कि यह संबंधों को सशर्त, नाजुक और लेन-देन पर आधारित बना देता है, जिससे वास्तविक मानवीय भावनाएं दबकर रह जाती हैं।

1.3 मध्यस्थ दर्शन का दृष्टिकोण

इस पृष्ठभूमि में, मध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan) या सह-अस्तित्ववाद, एक अलग दृष्टि प्रदान करता है। यह दर्शन एकजुटता और सम्मान के लिए प्राकृतिक मानवीय आकांक्षा से शुरू होता है। मध्यस्थ दर्शन परिवार को नियंत्रण या उपभोग की एक संस्था के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे एक ऐसे जीवित स्थान के रूप में देखता है जहाँ आपसी देखभाल और न्याय स्वाभाविक रूप से उभरते हैं।

2. शोध पत्र की पद्धति

इस शोध पत्र की पद्धति मुख्य रूप से दार्शनिक विश्लेषण (Philosophical Analysis) और सैद्धांतिक विवेचन पर आधारित है। इसमें सबसे पहले मौजूदा विचार प्रणालियों का मूल्यांकन किया गया है, जिसमें आदर्शवाद और भौतिकवाद का गहन विश्लेषण शामिल है। इसके पश्चात् पारिवारिक जीवन में उत्पन्न समस्याओं की पहचान करते हुए इन्हें उजागर किया गया है। अंततः मध्यस्थ दर्शन के सह-अस्तित्ववादी सिद्धांतों को एक समाधानकारी दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पद्धति सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच एक सेतु का निर्माण करती है।

3. मध्यस्थ दर्शन के दृष्टिकोण से मानवीय परिवार

मध्यस्थ दर्शन के व्यापक ढांचे में, परिवार को केवल एक सामाजिक संरचना के रूप में नहीं देखा जाता है। इसे मानवीय संगठन की मौलिक इकाई माना जाता है, ठीक उसी तरह जैसे परमाणु भौतिक दुनिया का आधार बनते हैं।

3.1 मानवीय परिवार की परिभाषा

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, मानवीय परिवार को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

"जन्म-संबंधी संबंध या व्यक्तियों का एक सीमित समुदाय जहाँ प्रत्येक व्यक्ति, मानवीय व्यवहार का प्रदर्शन करते हुए, संबंधों और मूल्यों को पहचानता और पोषित करता है, और भौतिक समृद्धि तथा बौद्धिक कल्याण के लिए एक-दूसरे के पूरक होते हैं।"[1]

3.2 मानवीय परिवार की विशेषताएं

जब हम एक 'मानवीय परिवार' की बात करते हैं, तो हमारा मतलब एक छत के नीचे रहने वाले लोगों से कहीं अधिक होता है। यह मनुष्यों का एक सचेत, सीमित समूह है जो साझा मूल्यों में निहित संबंधों के माध्यम से एक-दूसरे को पहचानते हैं। यह पहचान न तो जबरन होती है और न ही आकस्मिक होती है, बल्कि यह एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है। मानवीय परिवार एक जीवित स्थान बन जाता है जहाँ विश्वास, न्याय, सम्मान, और प्रेम थोपे गए आदर्श नहीं होते, बल्कि दैनिक जीवन के स्वाभाविक परिणाम होते हैं।

3.3 संबंध की अवधारणा

मध्यस्थ दर्शन में, संबंध को एक निश्चित स्तम्भ माना गया है। यह एक साथ आना या बातचीत है जहाँ अपेक्षाएँ, जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य पूर्वनिर्धारित होते हैं।[2] इस दर्शन के अनुसार संबंधों की मुख्य विशेषता यह है कि ये कृत्रिम रूप से बनाए गए नहीं होते, बल्कि स्वाभाविक रूप से मौजूद होते हैं। इन संबंधों में निश्चित अपेक्षाएँ और मूल्य होते हैं, और जब इन मूल्यों को समझा और पूरा किया जाता है, तो आपसी संतुष्टि प्राप्त होती है।

4. परिवार के मुख्य संबंध और उनके मूल्य

मध्यस्थ दर्शन पारिवारिक जीवन के तीन मुख्य संबंधों को विशेष रूप से महत्व देता है:

4.1 पति-पत्नी संबंध

सहज उद्देश्य

"आपसी पूरकता से परिवार में प्रज्ञा को साकार करना"

यह संबंध परिवार की खुशी की नींव है। विवाह केवल शारीरिक निकटता या सामाजिक कर्तव्य नहीं है; यह विश्वास, सम्मान और समझ पर आधारित एक सचेत मिलन है।

मुख्य मूल्य[3]

पति-पत्नी संबंध में चार मुख्य मूल्य साकार और व्यक्त होते हैं। पहला मूल्य स्नेह (Affection) है, जिसका अर्थ एक-दूसरे के साथ रहने में आनंद, सहजता और संतुष्टि की निरंतरता है। दूसरा मूल्य गौरव (Glory) है, जो एक-दूसरे की उत्कृष्टता को पहचानना और उनके जैसा बनने के लिए उत्साह की भावना को दर्शाता है। तीसरा मूल्य सम्मान (Respect) है, जिसमें बौद्धिक क्षमता और व्यक्तित्व में उत्कृष्टता को पहचानना और स्वीकार करना शामिल है।

चौथा और अंतिम मूल्य प्रेम (Love) है, जो पूर्णता का प्रमाण और उसकी निरंतरता है, जिसमें दया, अनुग्रह और करुणा की संयुक्त अभिव्यक्ति शामिल है।

परम उपलब्धि

इस संबंध की परम उपलब्धि "एक मन - दो शरीर" के रूप में संबंधों में अपेक्षाओं को पूरा करना है।[4] इसका मतलब है कि दो व्यक्ति होते हुए भी, उनके व्यवहार में एकता होती है। जहाँ तक मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, और सम्मान की बात है, वे सामूहिक रूप से दोनों पति-पत्नी के होते हैं।

4.2 माता-पिता - बच्चे संबंध

सहज उद्देश्य

"पोषण और संरक्षण"

बच्चों के दृष्टिकोण से मूल्य

बच्चों के दृष्टिकोण से इस संबंध में गौरव, कृतज्ञता, और प्रेम जैसे मूल्य सरलता, सौम्यता, और अनन्यता के माध्यम से व्यक्त होते हैं। इसके साथ ही वे अपने माता-पिता की सेवा और भेंट भी करते हैं, जो उनकी आंतरिक भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

माता-पिता के दृष्टिकोण से मूल्य

माता-पिता की ओर से इस संबंध में तीन मुख्य मूल्य व्यक्त होते हैं। पहला है ममता (देखभाल), जो सहज प्रेम और संरक्षण की भावना को दर्शाता है। दूसरा है वात्सल्य (मार्गदर्शन), जो बच्चों को सही दिशा प्रदान करने की प्राकृतिक प्रवृत्ति है। तीसरा है प्रेम, जो उदारता, सहजता, और अनन्यता के माध्यम से व्यक्त होता है।

भूमिका विभाजन

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, माता-पिता-बच्चे के संबंध में प्राकृतिक भूमिका विभाजन होता है। माँ का भाव मुख्य रूप से शरीर का पोषण करने के लिए होता है, जिससे वह एक पोषणकर्ता की भूमिका निभाती है। वहीं पिता का भाव मुख्य रूप से बौद्धिक विकास के लिए होता है, जिससे वह मुख्यतः संरक्षक की भूमिका निभाता है। यह भूमिका विभाजन प्राकृतिक है और दोनों की पूरकता में परिवार की संपूर्णता निहित है।

"माता-पिता अपने बच्चों के लिए केवल व्यापक समाधान और समृद्धि की इच्छा रखते हैं। इसके बदले में, वे अपने बच्चों से कृतज्ञता की अपेक्षा करते हैं।" [5]

4.3 भाई-बहन संबंध

सहज उद्देश्य

"सर्व-आयामी समाधान के लिए आपसी सहायता"

मुख्य मूल्य[6]

भाई-बहन का संबंध सौहार्द्र, सरलता, सौम्यता और अनन्यता के माध्यम से चार मुख्य मूल्यों को साकार करता है। ये मूल्य हैं सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, और प्रेम। इन मूल्यों के साथ-साथ भाई-बहन एक-दूसरे को भेंट और सेवा भी प्रदान करते हैं, जो उनके आपसी स्नेह की अभिव्यक्ति है।

विशेषताएं

भाई-बहन का संबंध सौहार्द्र का प्रतीक माना जाता है। इसमें एक-दूसरे के प्रज्ञावान होने की प्रत्याशा और उत्साह शामिल होता है। यह संबंध पारस्परिक आनंद की विशेषता भी रखता है, जिसमें एक का प्रबुद्ध होना दूसरे को आनंदित करता है। उदाहरण के लिए, जब एक बहन में कुछ सराहनीय गुण होते हैं, तो उसका भाई उतना ही प्रसन्न महसूस करता है, यदि अधिक नहीं तो। इस रिश्ते का मुख्य उद्देश्य हमेशा विश्वास और सम्मान के साथ स्नेह के मूल्यों को प्रदर्शित करना होता है।

5. आदर्शवाद, भौतिकवाद और मध्यस्थ दर्शन की तुलना [7, 8, 9]

विशेषताएँ	आदर्शवाद (Idealism)	भौतिकवाद (Materialism)	मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)
परिवार की परिभाषा	सिद्धांतों, धार्मिक नियमों और नैतिक संहिताओं से बंधी एक इकाई	आर्थिक जरूरतों, उपभोग और व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए एक इकाई	एक सचेत समुदाय जहाँ आपसी देखभाल, सम्मान और न्याय स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते हैं
संबंधों की प्रकृति	सत्ता, भय, या कठोर कर्तव्य द्वारा नियंत्रित बाध्यताएँ	लेन-देन पर आधारित, नाजुक और सशर्त	स्वाभाविक रूप से मौजूद, निश्चित उद्देश्य और मूल्यों के साथ जो आपसी संतुष्टि की ओर ले जाते हैं
संघर्ष का कारण	नैतिक या धार्मिक नियमों का उल्लंघन	आर्थिक या व्यक्तिगत हितों का टकराव	संबंधों में निहित मूल्यों को समझने और पूरा करने में विफलता
समस्या का समाधान	बाहरी सत्ता या धार्मिक अनुष्ठानों का पालन	प्रतिस्पर्धा या आर्थिक लाभ के माध्यम से व्यक्तिगत संतुष्टि प्राप्त करना	सही समझ के माध्यम से संबंधों के मूल्यों को पहचानना और पूरा करना

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

विशेषताएँ	आदर्शवाद (Idealism)	भौतिकवाद (Materialism)	मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)
व्यक्तिगत उद्देश्य	मोक्ष, आध्यात्मिक मुक्ति या अमूर्त आदर्शों की प्राप्ति	उपभोग, स्वामित्व और भौतिक समृद्धि	जागरूकता के माध्यम से व्यक्तिगत समाधान और समृद्धि
सामाजिक आधार	भय या लालच पर आधारित विचारधाराएँ	आर्थिक असमानता और प्रतिस्पर्धा	परिवार-आधारित स्व-शासन प्रणाली और आपसी पूरकता
अंतिम लक्ष्य	अस्थायी सामाजिक स्थिरता, लेकिन आंतरिक संतुष्टि दुर्लभ है	व्यक्तिगत लाभ, जिससे अलगाव और संघर्ष होता है	सभी में समाधान, समृद्धि, अभय (निडरता), और सह-अस्तित्व की उपलब्धि

6. चर्चा और निष्कर्ष

6.1 मुख्य निष्कर्ष

मध्यस्थ दर्शन की दृष्टि से, परिवार में संघर्ष और विघटन अपरिहार्य नहीं हैं; वे मानवीय स्वभाव की गलतफहमी के संकेत हैं। परिवार के विघटन के मुख्य कारणों में परिवार के भीतर आंतरिक संघर्ष शामिल हैं, जो मुख्यतः व्यक्तिवाद से उत्पन्न होते हैं। यह समझना आवश्यक है कि एक खंडित परिवार मानवता पर एक अभिशाप है जो न केवल स्वयं को प्रभावित करता है, बल्कि समाज को भी खंडित करता है।

एक मानवीय परिवार की विशेषताएं इसे अन्य पारिवारिक संरचनाओं से अलग बनाती हैं। यह वह स्थान है जहाँ प्रत्येक सदस्य की गरिमा का सम्मान किया जाता है और व्यक्ति न्याय, सम्मान, विश्वास और प्रेम का अभ्यास करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये मूल्य थोपे गए कर्तव्यों के रूप में नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर मानव होने की पारस्परिक पहचान की प्राकृतिक प्रतिक्रियाओं के रूप में व्यक्त होते हैं।

6.2 परिवार का संतुलन

परिवार का संतुलन स्थिरता (धैर्य) और वीरता (साहस) के माध्यम से स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता है। एक जागृत मानव की विशेषताएं इस संतुलन को प्रकट करती हैं। जागृत व्यक्ति जो भी गतिविधि करता है, वह हमेशा न्याय, समाधान और प्रामाणिकता से चिह्नित होती है। परिवार का सच्चा उद्देश्य माता-पिता के साथ संबंधों के माध्यम से पूरा होता है, जिसमें समाधान और समृद्धि का भाव निहित होता है। आपसी बातचीत में, प्रत्येक बेटा और बेटी सम्मान और कृतज्ञता के साथ जीने में सक्षम होता है, जबकि विश्वास को बनाए रखता है।

6.3 विश्व मानव परिवार का दृष्टिकोण

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

जब सभी परिवार जागृति प्राप्त कर लेते हैं, तो वे एक विश्व मानव परिवार का रूप ले लेते हैं। इस व्यापक दृष्टिकोण में मानवीय निहित साार्थकता या सार्वभौमिक लक्ष्य चार मुख्य तत्वों में समाहित हैं। पहला है समाधान, जो जीवन की समस्याओं का स्थायी निवारण है। दूसरा है समृद्धि, जिसमें भौतिक और बौद्धिक दोनों प्रकार का कल्याण शामिल है। तीसरा है निडरता, जो भय से मुक्ति और आत्मविश्वास की स्थिति है। चौथा और अंतिम है सह-अस्तित्व, जो सभी के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन का सिद्धांत है।

6.4 समाज और अखंडता

समाज और उसकी अखंडता को एक विश्व परिवार के रूप में प्रमाणित किया जाता है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, परिवार की अविभाज्यता ही विश्व परिवार की अविभाज्यता का आधार है। जागृति के बिना, परिवार और समाज का विघटन मानवता पर एक अभिशाप है।[10] यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि व्यक्तिगत परिवारों की मजबूती और एकता ही वैश्विक एकता का आधार बनती है।

6.5 मानव का लक्ष्य

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, मानव का अंतिम लक्ष्य जीवन-जागृति है, जिसमें जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन और मानवीय आचरण का समन्वय शामिल है। इस जागृति की प्राप्ति से व्यक्ति सामाजिकता के साथ व्यवहार करने, विचार करने और अनुभव करने में सक्षम बनता है, जो न्याय, धार्मिकता और सत्य से परिपूर्ण होती है।

समाज में न्याय का महत्व इस संदर्भ में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। न्याय के बिना, सामाजिकता और समाज की पूर्ति संभव नहीं है। सामाजिकता ही समाज का वास्तविक आधार है, जो मानवीय चेतना से सहज रूप से उत्पन्न होती है और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर सामूहिक कल्याण की दिशा में कार्य करती है।

6.6 अंतिम संदेश

मध्यस्थ दर्शन परिवार को सिर्फ एक सामाजिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक जीने की जगह के रूप में देखता है। यह वह स्थान है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है और उसकी गरिमा को स्वीकार किया जाता है। यहाँ संघर्ष को समस्या के रूप में नहीं, बल्कि संवाद के अवसर के रूप में देखा जाता है, जिसके माध्यम से समाधान निकाले जाते हैं। इस दृष्टिकोण में जीवन उद्देश्यपूर्ण और वास्तव में मानवीय महसूस होता है, जहाँ प्रत्येक दिन नई संभावनाओं और विकास के अवसर लेकर आता है।

यह संपूर्ण दर्शन हमें एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाता है जहाँ परिवार, और अंततः पूरी मानवता, सद्भाव और आपसी पूर्ति के साथ रह सकती है। यह केवल एक आदर्श नहीं है, बल्कि एक व्यावहारिक संभावना है जो मानवीय चेतना के विकास और सही समझ के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

संदर्भ सूची (References)

मुख्य स्रोत

1. नागराज ए, (2016), परिभाषा संहिता, p. 111
2. नागराज ए, (2016) परिभाषा संहिता
3. नागराज ए, (2016) विकल्प एवं अध्ययन बिन्दु, Pg no – 22-23

A. नागराज ए, (2011) मानव व्यवहार दर्शन- Husband Wife relations, 2011, Pg – 122-123
A. नागराज ए, (2011) मानव व्यवहार दर्शन- Parents relations, Pg – 121-122
A. नागराज ए, (2011) मानव व्यवहार दर्शन- Brother Sister relations, Pg – 124-125

4. In Video Communication With Shri A. Nagaraj – In past Philosophies no mention of Family Order https://youtu.be/wyG8mu6_6a0?si=__hg6nGh_iHrqwe9
5. In Video Communication with Shri A. Nagarj – "Family is Vyevastha in Madhyasth Darshan" https://youtu.be/S6ZkaA2tRO8?si=fOmiB4RxvZTnLIHA
6. नागराज ए, (2006)संवाद - (अगस्त, अमरकंटक)
7. नागराज ए, (2019) मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान. (Pg -130-131)

ऑनलाइन संसाधन

1. https://www.holybooks.com/category/hinduism/
2. https://indianmanuscripts.com/scriptviewer.php
3. Interview Sample Links:
4. https://www.youtube.com/live/dG-AccC5kHs
5. https://www.youtube.com/live/n6doL5TN7kE

विशेष संदर्भ

1. Pathak, S. (n.d.). Jeevan Vidya - Madhyasth Darshan by a nagraj Diagrame prepared by Dr. Surendra Pathak 8. https://drsurendrapathak.blogspot.com/2017/08/jeevanvidya-madhyasth-darshan-by_96.html?m=1
2. Madhyasth Darshan – Jeevan Vidya. Existence is Coexistence – A direct existential discovery of consciousness, reality & human purpose – by a.nagraj. (n.d.). https://madhyasth-darshan.info/

3. Pathak, S. (2024). Creating a unified society - The roles of Madhyasth Darshan and Vasudhaiva Kutumbakam in Harmonious living. Sagaruniversity. https://www.academia.edu/123439795/Creating_a_Unified_Society_The_Roles_of_Madhyasth_Darshan_and_Vasudhaiva_Kutumbakam_in_Harmonious_Living

मध्यस्थ दर्शन पुस्तकें

जीवन विद्या प्रकाशन, दिव्यपथ संस्था, अमरकंटक, जिला अनूपपुर (म.प्र.), भारत – 484886

1. नागराज ए, (2011); जीवन विद्या – एक परिचय, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
2. नागराज ए, (2011); विकल्प एवं अध्ययन बिंदु, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
3. नागराज ए, (2011); मानव व्यवहार दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
4. नागराज ए, (2011); मानव कर्म दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
5. नागराज ए, (2011); मानव अभ्यास दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
6. नागराज ए, (2011); मानव अनुभव दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
7. नागराज ए, (2011); अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
8. नागराज ए, (2011); समाधानात्मक भौतिकवाद, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
9. नागराज ए, (2011); व्यवहारात्मक जनवाद, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
10. नागराज ए, (2011); आवर्तनशील अर्थशास्त्र, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
11. नागराज ए, (2011); व्यवहारवादी समाजशास्त्र, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
12. नागराज ए, (2011); मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
13. नागराज ए, (2011); मानवीय संविधान-सूत्र व्याख्या, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक
14. नागराज ए, (2011); परिभाषा संहिता, जीवन विद्या प्रकाशन,अमरकंटक